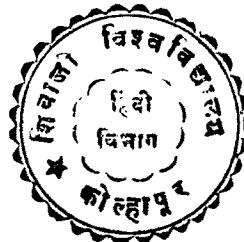


डॉ. अर्जुन चव्हाण

एम.ए.बी.एड.पीएच.डी.

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।



संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. अमर श्रीपती जाधव द्वारा लिखित “स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन” (‘कोर्टमार्शल’ और ‘काल कोठरी’ के विशेष संदर्भ में) लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 30 DEC 2002

Arjun Chavhan
(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. के. पी. शहा

एम.ए. पीएच.डी.

प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
यशवंतराव चब्हाण
महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

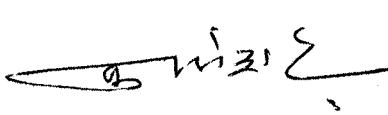
प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. अमर श्रीपती जाधव ने मेरे निर्देशन में “स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन” (‘कोर्टमार्शल’ और ‘काल कोठरी’ के विशेष संदर्भ में) लघु शोध - प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व - योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध - छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। मैं श्री. अमर श्रीपती जाधव के प्रस्तुत शोध कार्य से पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही इसे परिक्षणार्थ अग्रेषित करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

शोध - निर्देशक

तिथि : 30 DEC 2002

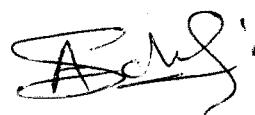

(डॉ. के. पी. शहा)

प्रख्यापन

“ स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन ”
(‘ कोर्टमार्शल’ और ‘काल कोठरी’ के विशेष संदर्भ में) लघु
शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की
एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे
पहले इस विश्वविद्यालय, या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के
लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

शोध - छात्र



तिथि : 30 DEC 2002

(श्री. अमर श्रीपती जाधव)

ପ୍ରାଚୀକଥାଳ

प्राककथन

एम.ए भाग दो में पढ़ते समय सुप्रसिध्द नाटककार स्वदेश दीपक जी के 'कोर्टमार्शल' नाटक ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया । उनका नाटक कोर्टमार्शल हमारी समकालिन व्यवस्था के हर अंग में छिपे उन चेहरों का सीधा पर्दाफाश करता हैं, जो कानून, नियम, अनुशासन तथा व्यवस्था की ओट में निम्नवर्ग का तथा नारी का निर्मम शोषण करते रहते हैं। नाटक "कोर्टमार्शल" की गहराई ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इस प्रभाव के परिणाम स्वरूप मैंने उनके काल कोठरी, जलता हुआ रथ, नाटक बाल भगवान तथा सबसे उदास कविता आदि नाटकों को बड़ी लगन से पढ़ा और मैंने यह तय किया कि दीपक जी के "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों पर ही एम् फ़िल करूँगा। मैंने अपने श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा जी से विचार – विमर्श करने के उपरांत स्वदेश दीपक के नाटकों पर अपना शोधकार्य आरंभ किया।

स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन आरंभ करते समय मेरे मन में जो प्रश्न उपस्थित हुए वे इस प्रकार हैं।

- 1 स्वदेश दीपक का जीवन किस तरह बीता है ?
- 2 उनका व्यक्तित्व और कृतित्व कैसा हैं ?
- 3 स्वदेश दीपक के नाटकों के मूल विषय कौनसे हैं ?
- 4 उनके नाटकों का उद्देश्य क्या है ?
- 5 उनके नाटकों में प्रमुख समस्याएँ कौनसी हैं ?
- 6 उनके नाटकों में निम्नवर्ग जीवन का चित्रण कैसे हैं ?
- 7 रंगमंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से उनके नाटक कैसे हैं ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध में किया हैं। अध्ययन के उपरांत जो निष्कर्ष मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के उपसंहार में दे दिया हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया हैं।

प्रथम अध्याय : "स्वदेश दीपक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

इस अध्याय में दीपक जी का जीवन परिचय संक्षेप में दिया है। इसमें उनका जन्म, माता, पिता की जानकारी, बचपन, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, बच्चे आदि का विवेचन किया है।

साथ ही उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर नजर डाली हैं। उनके रचनाओं का प्रथम संस्करण तथा प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान का ब्यौरा दिया गया है। साथ ही उनके सभी नाटकों के मंचन की विस्तृत जानकारी दी है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिया हैं।

द्वितीय अध्याय : "स्वदेश दीपक के नाटकों का सामान्य परिचय "

इस अध्याय के अंतर्गत दीपक जी के सभी नाटकों का सामान्य परिचय प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है। नाटकों का परिचय करते समय उनके हर नाटक का संक्षिप्त परिचय देकर नाटकों की कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल—वातावरण, शैली और उद्देश्य आदि का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किया हैं।

तृतीय अध्याय : " " कोर्टमार्शल " और " काल कोठरी " नाटकों का शिल्पगत अध्ययन "

प्रस्तुत अध्याय में 'कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी' नाटकों का नाटक के प्रमुख तत्वों के आधार पर विवेचन किया है। कथावस्तु पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद(कथोपकथन), देशकाल—वातावरण, भाषाशैली, उद्देश्य, शीर्षक की सार्थकता आदि तत्वों के आधार पर विवेच्य नाटकों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं।

चतुर्थ अध्याय : " "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों में चित्रित अनेक समस्याओं का विवेचन किया है। इसमें जातियता की समस्या, शोषण, भ्रष्टाचार, न्याय व्यवस्था, शोषणमूलक अफसरी सम्यता, अहंकार, काम, आर्थिक, पारिवारिक, साहित्यिक, कलाकार की उपेक्षा, प्रेम का खोखला आदर्श तथा व्यवस्था आदि समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं।

पंचम अध्याय : " " कोर्टमार्शल " और " काल कोठरी " नाटकों की रंगमंचीयता "

प्रस्तुत अध्याय में रंगमंच के स्वरूप के साथ हिंदी रंगमंच की विकास परंपरा को स्पष्ट करते हुए "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों का मंचीयता की दृष्टि से समग्र विवेचन किया है। इसमें विवेच्य नाटकों को निर्देशन एवं व्यवस्थापन, अभिनय, रूप—सज्जा, दृश्य—सज्जा, प्रकाश योजना, ध्वनि एवं संगीत योजना, रंगमंचीय प्रस्तुति एवं दर्शकीय संवेदना आदि रंगमंचीय तत्वों के आधार पर परखा गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

उपसंहार :—

सभी अध्यायों के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है। जो प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन का सार हैं। अंत में परिशिष्ट, आधार ग्रंथ सूची और संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई हैं।

प्रस्तुत शोध-कार्य की मौलिकता :—

- 1) संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा अध्ययन पर आधारीत हैं।
- 2) प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में स्वदेश दीपक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय पहली बार किया गया है।
- 3) प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में दीपक जी के सभी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया है।
- 4) दीपक जी के 'कोर्टमार्शल' और 'काल कोटरी' नाटकों में चित्रित प्रमुख पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट किया है।
- 5) निम्नवर्ग तथा कलाकारों की समस्याओं के साथ-साथ नारी समस्या का भी चित्रण प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में किया गया है।

ऋणनिर्देश

इस शोधकार्य को संपन्न करने में मेरी सहायता तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.के.षी. शाह जी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आपने समय—समय पर अमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया, इसलिए मैं आपका कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चहाण जी एवं आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा है, इसलिए मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री. श्रीपती जाधव, माताजी श्रीमती चंद्रभागा जाधव, चाचा श्री बाबुराव जाधव तथा बुआ श्रीमती सखूबाई पाटील, इन सबके आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य पूर्ति में सफल हुआ हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं की बदौलत हूँ। अतः उनका आभार मानकर मैं उनके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहता। मेरा यह संकल्प उनके चरणों में सादर अर्पित है।

विशेष रूप से मैं ऋणी हूँ श्री सदगर्ल दिनानंद महाराज कांडगावकर जी का जिनके आशीर्वाद के द्वारा यह कार्य असंभव था। साथ ही मेरी बहन श्रीमती श्रीपती सुवर्णा माने, श्रीमती संगीता कदम और अनिता, जीजाजी श्री विलास माने (वडणगे) और श्री शहाजी कदम (वालवा) जिनके प्रोत्साहन और प्रेरणा के कारण आज मैंने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया है, उनका मैं हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

मेरे सहपाठी जयश्री चौगुले, श्री निवृत्ती रावळ, मिलिंद पाटील, संभाजी सुर्वे, स्वजील किनरे, प्रविण कांबळे, मल्लिकार्जुन चोखंडे, आसिफ कुरणे आदि से मुझे अनमोल सहाकार्य मिला। उन्होंने मुझे समय—समय पर प्रोत्साहित किया है। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय में स्थित ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। ✓

इस लघु शोध—प्रबंध का सुचारू रूप से टंकलेखन करनेवाले सचिन कोळेकर, कोल्हापुर का मैं आभारी हूँ।

अंत मैं उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्ति जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है। उन सबके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख इस लघु शोध—प्रबंध को परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध—छान्त्र :



स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 30 DEC 2002

(श्री. अमर श्रीपती जाधव)